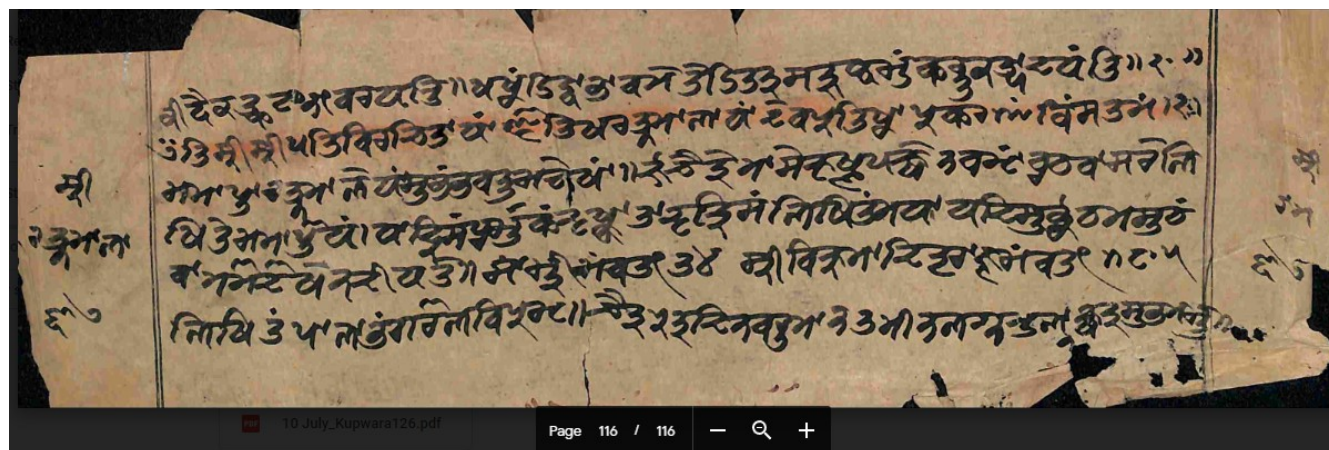




विदितं यम उदं ये भु यो गे ए च सु ति ये गिनः श्री पात्रः विम्वरु रम च स ह्य सु उ उ वं

उं उं विदितं यम उदं ये भु यो गे ए च सु ति ये गिनः ॥ उम उम उति मि तुं विम्वरु रम च स ह्य सु उ उ वं ॥ म न्मि उ
म ति वं दे उ गू डैः क त मी सं ॥ वि ल कृ ग न्म दि म ति पू ल्म उं वा ग ड ल ल्म दि कृ उं
र म्म म्म ॥ दे व ह क पू उ र ल्म उ म्म वि र ह उ ह्म उ वि र कृ म्म ल्म ॥ म क ड क तः
प य ग क ड प्पुः म म्म नं द मि यु ग्म म्म उः ॥ व र दि वा मि उ ह्म उः म त्त वः
प य्म पु मे ये प्र उ व द य्म ॥ म य प्र उ व द य्म नं न म्म नि ॥ प्र उ व वि उ व प्प मु लः ॥

ਯੋਗੇਸ਼ੁਰੁਤਿਯੋਗਿਨ:

ਸ਼੍ਰੀਪਤਿ:

विष्णुभक्त्युत्तमसुते उवाच

[illegible]

ॐ

प्रमोदनाभा प्ररुपतिउवाः ॥ परिउं गिंरा मुउमु । श्रीभापवैयव पिरुः ॥ ठाउमूर
 वदुठा नै । प्रमा विनाभा यविनूगः मयूषः ॥ सायठिउतु दूरमं डूठु नरयउ
 रगणप्यमु । पाडिवनाभा वय उंति मच लिटा विषमचठा गीर ॥ उटनूविगे
 ठीविनूतः परदं नंदन वि एय एयमंहु ॥ भद्रय इभापमंहु । वय'पगे डे
 मलां वक वि लां वकी ॥ उाद्विक विनाभा य । मचगी प्रव उं डू मुउनूत ॥ मैउनरुद

उमा
 ल
 र

श्री
 उमा
 ल
 र

श्री
 गुरुभक्त
 ३३

मंत्रैः शिवादि तैः यः कुरुः ॥ विष्णवेः भूत उपायं दत्तं तं गे च किं विदितं विदुते उत ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥
 साधयेत् ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥
 चिदतेन विदुते ददि गतेः ॥ ॐ ॥ साधयेत् मन्त्र ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥
 ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥
 ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ ॐ त्रिमदन्त ॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥

श्री
 गुरुभक्त
 ३३

मीउगेः॥ ड' वल दित्रु रवेउवी द द्विवकरः मंरुमं लं उरुः॥ गड मुमचेपि वेलाउरु नैः॥ कुं
 इममु सधिवरु ममुः॥ ॐ डि मी धाउ विरयितु यं हूँ डिधरुमा लो यं मंरु डिधकर लं रुवमं
 ॥९॥ सावगेरु प्रकर लं॥ भुचेला उग्रडडितु मिपुंरि पुधुः कुरकी डधुपु प्री धु डू डू
 पंमंरु वरि डिध विधममी॥ पंमंरु विव लं रुगुः॥ ठाठरु मुठनेधु व डू डिधरिः पुं धु धु पंमंरु
 वुठः॥ मूधु एत्र गड विगेरु विठे॥ विठेन चेडू डू डूः॥ लं विठे मापम डू धु डिउः॥

श्री
 २ इमा ता
 ३४

विष्णुर्गोचरे ॥ उन्मत्तं कनकुं धि लो नरं ॥ अं ॥ उन्मत्तं मय की वित्तं म्कि उः ॥ वैवर्षि
 ध्रुववत्तं विष्णुर्गोचरे ॥ धि उः ॥ पन्ना गे र वृत्तः ॥ गे य नी य उं ड देव वे र नं ॥ प्रभुः
 मन्मत्तं प्रकं मि उः ॥ रवि र प च ये विष्णु र्मत्तं म्मे य ॥ कुम्भ क ले वि र मन्मत्तं गुम्भ
 नरं य उं के ॥ गट उं मि उः ॥ मन्मत्तं विष्णु विष्णु र्मत्तं मुम्भ क ले र व व लि उं विष्णु
 गट उं य उं के ॥ मुम्भ क ले य लु गे र व ॥ मन्मत्तं ता र्मत्तं री वि उं यः ॥ मुम्भ क ले मुम्भ

श्री
 ३४

सुवेदि उमुते मिथ लो के मापि पिठरे च्छे ॥ यः मद्रूप मेने विलेकि उमु ॥ मनी रगे मु
 गे यि वीरिपे गे उ मि उ गे उ ॥ दृषा ८ तं प्रकी वि उ ॥ मम मु मे व मु रि ति ॥ माक त
 रं दं मगयं यम उ मं ॥ मद्रु रमा जंग ए व ए वं रं ॥ गट डे य रं गम रं वि व ल य
 म् उ डे य वि न्द्र वि य म मि उ वि ड ॥ स दं डु धु वि व मं रं म ठ रं ॥ गे यं सु रं सु रं सु
 ए म् ॥ म कु मु रं जे उ म क डु ए म् ॥ म रु व रु रुः की वि उः मे यं यं मु ॥ म गि रं उ म

श्री
रत्नमाला
३४
३५

भरुतममलं॥भक्तुदलंसीउगेःभाडियभटविमंभरकउं।मोभरभगावउउंदेवेह
भरुपुष्टरगभवरनदववइंजनेः॥नीलंविमलामहयैमुगदिते॥गीभेटवेव
दके॥सायंभरुं॥भरुःमितै।ताभरुदवकुंकुमेवगीरयथीमपुपन्रकविउः
भरुभरुपैविषमविउउगे॥मुगवउंभरुमभरुहउंवुठः॥३॥पंठगदगददउवि
मिमेः॥मापमुनिउभरुदवदिकैमु॥सीउरमिउउवेकउउंउ।भरुभरुउउमिउंउ

श्री
रत्न
३५

[illegible]

श्री
राम
३६
श्री राम
३६

मङ्गलद्वयमदीनं ॥ १ ॥ पवित्रं त्रिपाभा न तः पिपलता ॥ सुप्रेतुभवनमपि नैव समीप
 चतुर्मेदः क्रमात् ॥ सुदक्षिणतमं पुनस्तम्भमभिर्द्विभायकद्वयैः स्वस्तिग्नः भावता
 मङ्गलविनिर्दिष्टः प्राद्वेसभात्तः सुतः ॥ तेन सांप्रवत्तवचिद्वयः कंचनं पीतवत्तं
 न्येतुम्भः स्वस्तिविनिर्दिष्टा त्रिपुल्लिङ्गमदीनः ॥ सुदक्षिणतं भविष्यति तद्विनिर्दिष्टं
 सुगन्धं ॥ देववत्तं वत्तं वत्तं वत्तं ॥ संप्रवत्तं वत्तं ॥ संप्रवत्तं वत्तं ॥

३३ ॥ ५ ॥ ७ ॥
 ३३ ॥ ५ ॥ ७ ॥
 ३३ ॥ ५ ॥ ७ ॥

[illegible]

श्री
राम
३

मकलकभूषण हवभद हूतः सुविधिः॥ वलन्यपक्ष दिगदि उदिमं मो मुतेमुं पक्ष
 भद दारति॥ भित्तिर स व मुतेमुं पक्ष वनिधू उवते नृप उ॥ गीर्णान्नव
 मोदितीयगः॥ पंथमैरियेष्टि म कचः॥ ववम न उचरिय उ वृष्टि वम डिमद
 मः उले उतः॥ इमं क्वय मं पद वै विपक्ष॥ केम सध प र मुत नृकधू॥ भैड
 डिमैडि नवेडि उ र म्दः रुम उडिः परि वरुनेन नाल व उल पक्षे मा उर म्दः ५

दिनांक १३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

श्री
२३०० ता
३७

दधु लगे दि अउउ ॥ विनुय लु रि कं कभ्र । कभ्रुं मिषु नेदये ॥ मि ॥ वा पी कुपउ
 बु । कं रि । वा गिवं ठन मे क्क ल । प । थि कं कभ्र य उ मु न चं मि वु डि क वि मि ॥ क
 वलि दू वा रि प हं च कभ्र लं नृ य मे वनं ॥ पर ये ग सु मे ये कु य मु क भ्र ग वे डि उं ।
 मिं ॥ लु थ वं मि लि वि ध नं नु य लु रि स नं मि रं । कभ्रु दः धो थि कः र भुः
 कं टा लगे उ मि कू ये ॥ कं ॥ नृ थि कभ्र वा ल क्क वाः वा इ कभ्र उ नेदये ॥ ध मि

श्री
गभ
३७

वृत्तिदिकमन्त्रालि॥ तुलातुं वृत्तिमित्रा॥ ३॥ मां उमं दारं लीं गुरुं नृणां एवमेव विवेचनं॥ ४॥
कर्ममित्रं नृणां कर्ममित्रं कर्ममित्रं॥ ५॥ प्रवृत्तिं नृणां विवेचनं उमं दारं नृणां विवेचनं॥ ६॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ ७॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ ८॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ ९॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १०॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ ११॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १२॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १३॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १४॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १५॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १६॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १७॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १८॥
नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ १९॥ नृणां विवेचनं नृणां विवेचनं॥ २०॥

ॐ

हं हं विवेकं कं कं दं मी नैटये वृत्ते ॥ सुबुध मेयं द्युटये बुकम् एउति निवृत्ति यवैति
 उ॥ ॥ नूर गूड लोक मयै गद द्यु ये उ पु कम् एउति न ग मव ॥ विनाग डे रं न कम्
 नवं म द्यु मेर दं मं मकं ॥ ३ मं न मुति य बु जः न मी न गूड द म्मुतः ॥ ठ न मि यु न तु
 ती व ठ वि गी मी न क द्वा ॥ ३ मुत उ व न वं द्वा मयः न पु मी न ॥ मालि य द म्मा त्मिं द
 यमु प य म्प द्वा म्मि ति वि र वि डि उ मु र मयः नूर गू वः ॥ मी न गू उ यं ना प लु र द्वा ॥

श्री
 रज्जु माल
 ४.

श्री
 ४.

येनेनममयिउरग्रडा ॥ कुरेपिनेमम सुभुमिडा वरुं कुरेपिपा पा मिउउग्र
 व ॥ ग्रडा मरु वलोक ॥ म मेरु वरुवउडे ॥ ग्रडा कुरेपि ॥ ५१ नेने मरु वरुवउडे ॥
 सुदे डिमं पुरुष ता पूरुव ॥ मेरेपुनरु चरु तावि ताग ॥ मती वरुमुं चरु ता मरु
 उ ॥ विनिमिरेयं विउय मरुपुः ॥ सुबु केरु निठन निरेदे ॥ मीरु वरु मिरे
 म मेपि ॥ मत्रि वेम उरिउरे विरु मरुः मरि विरु उरुवेदे वरु विउ ॥ कुरु मरु मिरे

पं० मुडिक विडे पिचक तं ॥ कमये डि यउ मं उत्रय डी ॥ लागर म्म उर मिमिडे ॥ व कूडे
 द वरु म्म गुर्व ॥ पुडक म उदयेय मिडेव ॥ प्रेयमी मम डि ३ : ममयेय उ ॥ मायगड ५
 वेमलागु म ५ ॥ मड्डे डि वकलागु मे चलो ॥ नै डिडे : पुनर मेनुगुडे : ॥ मायु मेगुड विवडिडे
 मिडे ॥ ग्म म्म उर व ग्म ५ वेमनं ॥ डिक्के कु मुने लग्न ॥ ठक्कं उं उं वेदिने ॥ मंगल म्म डि
 म्म ॥ पमुमदे वृगुदये ॥ पुहु च्छे वेम गंक्के म्म च्छे ॥ दी वे लागेव कूडे व म्म च्छे ॥ मी म्म पुय लि
 कु

श्री

रत्नमाला

४३

ॐ नमः

श्री

कर्मणि कदम् ॥ ३ ॥ मित्रं वनं हविरेकः ॥ यत्रैतद्ये उदिवमे भवेत्ते च उभयसुखे च
भंगरुः सदा ॥ उदं नमन्तेति उवगु वायी मेवादि कदम् च मित्रिचु ॥ दवाचये
कर्मणं वपुपद्वे ॥ पापैश्च नृणां नै चीडी नैः योगे प्रवृत्तं दूयेन सिद्धये ॥ कदं उह
उदं द्वाभमन्ते ॥ मूतिमूतिपुनं ॥ मित्रं कुनं वपु कदम् ॥ गुनं ॥ लग्नवने
यु ॥ प्रं मुचु लोमति ॥ मय विदं रं कुजं ॥ लग्नकर्म गउमं मे ॥ एषी वेव न उदी ठउ ॥ ३

श्री

रत्नमाला

४३

ये को मुने मित् ॥ विदुः ३३ः प्रमत्ते ॥ माय ह न जं ॥ मी उं मे वृत्त मित्ते । मुने धृष्टय व'दि
धु ॥ ए न न ग ५ मं क दं डिदु थ' प ग ५ दयं ॥ माय न द ३ ३ ॥ वृत्ते विलाग्रे म मित्ते ॥ ए
ग मे मुनुयी क्ति उ डिदु क न्ते मुने दृष्ट ॥ प्र' ३ ३ ॥ म' डि विदु उ ॥ माय प' ए लाग्रे ॥ न म मे
क' २ मे लाग्रे ॥ विदु के उ डि के म' ने ॥ मुने ॥ प' ए न क' मे कुं ॥ व' ल' म विदु थ' ए दयं ॥
माय द ला' ३ ३ ॥ लाग्रे इ वे ए य व' उ च ले सु ॥ कूवे ॥ मुने स' धि मे धुं ३ ३ ॥ मुने दृष्ट
म च उ य' म न नं ॥ प्र' ३ ३ ॥ नुः विदु य' डि वि क न्द म' ॥ माय य व' ३ ३ ॥ नु न म ३ डि न दय

श्री

भक्तमाला

४३

मुने ॥ मङ्गलैषु ठिउं वलवडु ॥ मुपुपमुठिउं उक गिलि यगे ॥ कीरुता ठिय उमे पठने
वा ॥ मायनं ठिकर ॥ ७७ ॥ ठु गे मेडे मी उरने मपुये ॥ मृदु मं व मुई द्युय लगने ॥
मायुमं व उं ठिता पे प्रदिषु ॥ पु च म दे उ मं य न निविः ॥ मायवे उ ल निवि
मड ॥ यडे म य न्द अणे च ॥ नेषु मुनेषु मे थिच वेउ ल निविः ॥ प उ ल वृगे षे
पट लगने ॥ मायनि म गुरु म ड ॥ मङ्गलै क व ज न्द ॥ मृदु व ति निवे ठने ॥ निवि यगे
कपुडे ॥ दुठि म जे रि के न्द ॥ मायन च लगन कं ॥ वृठने ठने मं मुने ॥ मङ्गलै पठने

श्री

भक्त

४३

गं येयं मृगं उरुं च वा दं ॥ सुष्ठु मर्कं पवित्रिषु उ' य ॥ मां येय वस्तु मिडिवा दं चं डि ॥ मां तामेडे
 मेरुगं मायुता पुत्रिस्तुति विषयेषु ॥ दृ' यं येडे यउम ॥ कृतामिडनममेव' शिषु उ' ॥
 द्रिय' लि ॥ ये स' तामे मेदि उ' मयु तिथुं ॥ ठडु तामे कुं ॥ तं पेरचे द्रुः ॥ येतिषु उ'
 म' दुवे उ' द्वितीयः ॥ मेयव' नेयेव मेव प्रकृतं ॥ मंगलु गु ॥ मं यदं ॥ न पत्य लवि
 ग' लै' रिने नु ॥ प्रवु उ' उ' ॥ वदु मउ' र' देय' ल' ॥ ननु वि गु ॥ मं यये प्रवु उ'
 उ' देय' ल' ॥ दुर' जि' थिदु उ' मने मालिता विंदु रेकु यय ॥ ९ कैपि डंति गु ॥ ल' ॥
 पवित्री मेरुयथं मेय कुरु र' उय' कुरु' मिषु मं की' मिडं मगुल' ॥ ल' ॥ दयं दयं दयं दयं ॥
 मिडिवा' म' मयगम' म' द' म' उ' म' व' ये ॥

श्री
 उ' द' म' ल' ॥
 ४४

श्री
 ४४
 उ' वि' प' म' य'

मपीडदेयः॥ क मुडु रेयदिगु म्मि ३३ दि विठी॥ मरुट किं गय पा व न पंठगदु मं पुह
 म३ क तामं गति नी करे डि ॥ ॥ ७ डि म्म प डि वि र डि उ दूं ह डि य र म्म ल यं ल म्म
 प्र क म्म दूं द मं ॥ १३ ॥ मायमी मं उं न य न दि प्र क म्म ॥ ३ डि रे मी मं उं ॥ अ धे रं म म्म व धु
 ने वं उ र डि ये ॥ वी दूं प प रे वि ठे ॥ वि धे रूं धूं उ नै रं न म्म उ ग ते मं ल म्म ल ग य म्म ॥ ठी रूं
 ५ म्म धु ये म्म रं म्म उं ॥ पा ये म्म उं दूं ह जे ॥ म्म दूं दूं म व लि ते म्म ग डि डिः मी मं उं क म्म
 म्म उं म्म ॥ माय रे उं क म्म न म्म ठे य ल म्म ॥ म्म दूं दूं व किं प्र रं धु ते धु ॥ अ नै वि ठे यं ल म्म

वि

मिउयेसुवसुयंति

मिउयेसुवसुयंति ॥ म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो
म'केरी के निजु म' डे न दी नः ॥ कूः नो

34

श्री
राम
४७

मुचिमुमुत्रैः मुमुत्रैः मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥
 मुमुत्रैः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥ मदीपती नमः विवेकं पूः ॥

मीउमैपा पदये॥ यमभरनमपैति। कूपतिः मद्रुपेय। वयम उरिप्रवलं॥ मद्रुतं नद्रुविषु
 मकतावुवनमंभु। येय निष्ठा सुतेन्दः॥ यन्त्र विवेके मरुव रम इ॥ उवेदितानेयदिव
 दिकेल्ल॥ मुक्रेवुरे मद्रुगट डरेः॥ ममैर उव पिचिवा ताव्ये॥ इतिता कुमनेरे मन्निउिग
 र म्मी॥ मेधुव ल्ल वंयुगट ड गुवमु॥ यन्त्र इयेगे क्रियेउे विवेकः॥ मं पडि व उन्त्रि
 व युयः न्द्र उ॥ ॥ उंति मी मी पडि विर चिउ यं एति य व दूम ता यं र ल विवेक
 प्रकां न्द्रुमं॥ ग४॥ मायय इ प्रकर लं मं वृउ॥ य इ विर नं क वय म्मु उः म
 व

मी
 र दूम ता
 ४८

मी
 र म
 ४८

मचैकयेउमरु लिलिगीयेः॥ मउकिउ एमत्रियणयन॥ कलापि रकुपु म वरुउं॥
 मरुउरुमनेयदेदं ये एमत्रियमउं॥ प्रनेरठमिमिउं॥ चिहउमरुमउं॥ रुम
 ममिउरुमवितागं॥ उउउ उरुयगं यदिवमं॥ इयकं विपुं मिउउं॥ मउ
 वंयय मयेउिउरु नीम॥ कगिउं मिजमनं तं॥ रु वितागं मुउरु विपुउं॥
 मिउं येउरु म नंयउः॥ मुंमुं विपुउं विपुं वं॥ मिउं मं वरुयं पुपुं॥
 रुमगैः युउ मिनीय उरु पु य उियय उरु मुं॥ मिउं उ मउ एय विपुउः॥ म

^{वि}मृदमैडिडिउनेयु येयं डिउेयं॥ ^इप्रमृ वृडि जगनकुमने ^{है}ठकं लेयदिन'उ॥ प्रयेए
 नयुइ यिकेपुपुपु* डिचिलंयवेयं मयिपगंपी वृए॥ विड'यदि कुलमम'इ
 य'चकुन॥ यदिचदिगुलम विमुठिचिउे॥ य'य'इ च'इ गैर'गिक'युं॥ प्र'ग
 ॥ य'कि'इ'यैवम'म'विप्रच'इमुः प'य'मेइ'मय'मिनेय॥ च'इ'द'इः मचदिगु
 उक'लि॥ चिइ'विम'प'न'ताय'म'म'इ॥ व'य'इ यिउे'म'इ'व'उ'इ॥ य'इ'म'अ'इ'प'इ'प'

श्री
वसुधा माता
५

ल्लुगुनि॥ नमोऽतिरेषु निररुतुनि॥ पुचः के प्रवभि मूठेनुगभनं॥ तीक्ष्णैरुभपंचितं
गमैरुपारवभारिनापुठिनि मैरु गडूचुपि॥ उग्र विरुगन पेरु इवामयने
धुंतिमं उरुः॥ भवेत्येव कचेरु वेहु उरितिः॥ क लो पुय नं मुतं॥ डिगं मुमम
यनयनु लामः इ॥ य नं प्रमकुं मय उयेनु य पडुत वे॥ य य दिव निमगं मं
मय मरुयः उ॥ य उरु वंति वडु ठा वठ वंरुयेयाः॥ साय वः मुता नि॥ मुक्रु दि
दिने नवः र ल रिमं॥ न ह्येनु एरु उरं॥ मंरु मुदिने न मरु ककुतं॥ य नं गुंन

श्री
गं
५

कूडा॥ कुलातीति विलं पयं॥ डिम करुये विडु लवु मय॥ इधु मा पुनर पउं डिनुवि॥
मकु म कुलमायि॥ उदयति दिमिय मं॥ यति यडुमा सु विरगति ठुनु॥ येय
दिग्द उडु॥ डि विठमिडमिउर पुनउमनु यडु॥ मदिठिउर य ए॥ इ एउउउ
यडु उ॥ चन्नेय नऽऽः प्रति मुद्रय न॥ यिय मिउं मिविमये डिउउ॥ क मं डुए
इ प्रति मुद्र मनु॥ यडुय य इदिगी यउ॥ नीरग गूउ डिउ प्रति लेगे॥ उ जवेकनु
पिउ मुग उव॥ प्रमु उ नर पतिः प्रव लेयि॥ डि प्र मेव वमनो डि विपु ए॥ मयवुउर

श्री

वृद्ध मुल

५१

दत्तात्रय ॥ एवं विष्णुः प्रसन्नः किञ्चित् प्रयत्नः कृत्वा विष्णुः च चक्र तावत् । ५३ ॥ अत्र चन्द्रः प्रसन्नः
उत्तमः ॥ अत्र चन्द्रः प्रसन्नः ॥ विष्णुः प्रसन्नः ॥ साय विष्णुः प्रसन्नः ॥ विष्णुः प्रसन्नः ॥ विष्णुः प्रसन्नः ॥
म ॥ उभेदनेदुःखं यत्तुः ॥ ज्ञातं गेन प्रव मेदिगी मे ॥ गंतुमभिन्ना पत्न्यकं टकण्डे ॥
रुमनमनयतामः क्रेतुं देवतां च ॥ विदुः विष्णुः चन्द्रः च मद्रुते तागुरुते ॥ यत्ति
विष्णु उ उ दीयेः तागुरुः यत्ति विष्णुः ॥ गमनमय विष्णुः उच्छिन्तु नृमेव ॥ येषु देव
विष्णु उ उ दीयेः मिच्छितुः ॥ येषु मिच्छितु वेमिभं विष्णुः ॥ येषु मद्रुते तागुरुः मुनेठने
तागुरुः गमनमे मुने वडः ॥ मद्रुते तागुरुः गमनमे मुने वडः ॥ मद्रुते तागुरुः गमनमे मुने वडः ॥

श्री

गम

५१

विवस्त्रिषुडिमंगलं गति॥ उंग १३२५० पुनः मिषु॥ वरुः पकुगी न तामे मकेव॥ कं दे मित्रिः
 ३८ त्रिपुडिमु उडः तेषुः कुं उं पुडु मे मन्दि उं य॥ तामे म यं मे दूने य न मिषुं॥ मं विः
 के मे ठ चिने व ड म नि॥ मं डः मड न मं न सु य म म॥ कं पं र मु यं वि व रं वि रं वं॥ तामे
 डु व द र मे डे वि डि डः॥ पं डि ड र म डं पु व हं डि ड व॥ न व प रं मि प उः मु ड डे मे
 मे मः पं पु व डि ड रि ठ वं॥ मु ड मु मं डे वि म ड उ रं डुः॥ र व र ड म वि वि रं मं यं
 उः मु ड म ड डि ड म डि र म म ड व ग उं यि य मेः॥ मु ड वि ड व मि य मे न क ले पि मे मः॥ मे यः रं

श्री

उत्तम

पुत्र

मुनयमलुंगउंविड'य॥मासुंगठ'गूडविपुविट'दधु॥नीरुमिड'विकरयैविगूडंपूय'उ॥
कुक्क'ल'वक्कुकिनाथिर'८०तंविताग'॥रुडुं'क'नाःकिताकुवंतिनाकेर'॥य'य'॥यैग'
र'८०'य'उ'वि'यं॥वि'य'य'उ'म'य'पि'ग'दि'य'म'मं॥उ'य'वि'ड'य'८०'ता'नि'पे'य'र'॥८०'तं
प्र'य'म'क'डि'डि'यै'ग'म'उ'वं॥म'डी'रु'उं'यै'ग'का'डू'ने'र'यै'दि'र'डू'न'८०'य'ग'ल'८०'य'उ'य'उ'
म'उ'र'क'र'८०ः'म'कु'न'पू'र'व'डि'॥ए'न'र'मे'य'र'८०'म'हू'र'म'कु'उ'॥उ'यै'कु'ल'८०'क'र'ल'८०'य'भ'र'
यै'गे'वि'ता'ग'८०'डि'म'गे'रु'पा'८०॥य'यै'उ'य'८०'८०'ता'र'८०'यै'गे'॥य'उ'र'उ'डि'न'उ'पि'य'कु'॥म'

श्री

उत्तम

पुत्र

छममिमिगिगिदिदेगमा॥ ममं कभरु^६क^६रै^६रु^६ते^६रि^६मु^६ति^६ व^६रु^६ति^६॥ गउर^६कु^६प^६उ^६र^६॥ ५
 य^६॥ के^६ए^६ये^६उ^६॥ साययमा^६दि^६ति^६॥ पं^६रु^६दि^६दे^६ग^६मा॥ य^६म^६॥ मु^६रु^६॥ म^६डी^६म^६ते^६य^६॥ डि^६
 वं^६उ^६ल^६म^६व^६रु^६॥ न^६थ^६उ^६ज^६उ^६॥ सायमचगर^६डे^६दे^६ग^६मा॥ डि^६के^६॥ के^६रु^६य^६उ^६वं^६उ^६र^६॥ म^६॥ ३^६मु^६रु^६
 ००^६॥ म^६रु^६रि^६गे^६उ^६य^६॥ य^६॥ य^६॥ उ^६म^६ये^६उ^६र^६॥ म^६॥ डि^६प^६॥ त^६क^६॥ व^६रु^६म^६रि^६के^६व^६॥ ॥
 सायगु^६र^६वि^६रु^६दे^६ग^६॥ गु^६र^६ल^६म^६रि^६वि^६॥ य^६॥ र^६॥ र^६॥ र^६॥ मु^६रु^६॥ उ^६॥ य^६॥ उ^६॥ वि^६म^६॥ म^६॥ ॥
 न^६मे^६॥ व^६रु^६रि^६॥ ॥ सायममि^६रि^६॥ म^६॥ र^६॥ गु^६र^६॥ मु^६रु^६॥ ये^६ग^६मा॥ ॥ ॥ य^६॥ र^६॥ य^६॥ र^६॥ र^६॥ र^६॥

के३

मुकुटः॥ पूषा लृपते दध॥ इन्द्र उग्र मेदिनी॥ सायवक्रि लृ गूडमनिषेठं॥ निधुमुद्रुपय
वकी॥ उग्र जेपिविनागः॥ कर्णेति वक्रुठ न मं॥ उग्र वैपियेय मि३ः॥ येरु उके कु क्रि डिप त
ये गैरु डी कृ उयं डि डि वि पु न विरेडु॥ उयं पूकय गिरयेति म डि॥ विरेडु यि लः वा मूक
नायव डै॥ पूषा डि ये विनाग ग॥ गुग्गु म डि मि डि विरे मि उ वि गे न म मू री न विरे म डि
दध मर न॥ सायवैग रि न ड॥ एक न य इन्द्र लि च्छु रु डी नं योगः पूकुः के३ ठ वृ मि
उ३॥ दूकुं मेयं म डि योग विर न॥ उग्र न चै वैवयोग विरेगः॥ ॥ सायमनु न डि॥ मनु उ म
मि उ म नै वि रि नै न दय वि मु वि मि उ प्र डि ५६॥ विपु विधयं प्र डि ये वि रि गी ध॥ वृर डि उ म रु रि

मी

रुद्र म सा

पु३

मी

रुद्र

पु३

मन्त्रिण्यम् ॥ मिमिदुग मिरेकडे ॥ नृ लं मरुमुषैक ३ ॥ मउयिद्यमडं वुछैः मने वि मुविवि
 थडे ॥ कुल्लु धा मिता वुवुता रठि उय ॥ गुरुं पूष का रंग लं ॥ मा जंमा मरुद गिता यमनाडः
 प्र मंमडः पायमं ॥ उदेगं धिमिडं डिता रं मषदि विवि कं रं मउ ॥ मामिदं द्रुवुवु
 धियं गुक मउ ॥ मिदं रं रुमुद नाम ॥ यवः कुलाडु दु मपुद ह मिमं ॥ मुतां व मकु
 न कला नं ममं कं ॥ मा लवमं मं धिमिडं उय ॥ यवेषु मं मा रुष मकु मा मं म
 मुह डिता रं मउ पय विः ॥ प्र क प्रवुडि रं ममः पल्लु कु ॥ डिता रं य मरु नं इयदिग
 रु ॥ यडि उरं मुदय रुवि रं ॥ मदि कं मयु उय यमं उय ॥ कं रिकं मउ पय रठि रं मउ ॥

मरुमं
 मरुमं

श्री
 वक्रमांता
 ५४

श्रीमद्भक्तिकण्ठिकांतिस्तोत्रम् ॥ वागदेउदविठिवृत्तैः समुत्तः ॥ दुष्टवर्द्धिदेवतां सुप्रभम्
 मूर्ध्नि यतुः नमिषुवृत्तिदेवता ॥ यथा द्वा मा ठी नवगंधु पूजितः कैलाश नो
 मिचिकलंप्रया वाता ॥ ममापेक्षकंदं मयमप्रया ॥ मदीमुतां मिजमामा दुव
 दः ॥ कश्यपुतां मममममृती धुं ॥ प्रभा नायेदेरायिकंदाय जी ॥ प्रभुतां ममां दु
 वचयं मता ॥ पमुतां केचिदुयं मतां ॥ मवृतां मतां मवृतां मवृतां ॥ गतः ॥
 नमः ॥ मते ॥ वमस्वैकदं मवृतां मते ॥ मवृतां मवृतां मवृतां ॥ यः प्रभु

श्री
 वक्रमांता
 ५४

३: मी पितृपंथरं ३॥ कुड्डे ॥ य इ पण्डः पूरिषु ॥ एक इ द्युविउमदं तगुद इ मडिगे ३
 मन्त्रवतः ॥ पंचदिनपुत्र इ नुयेउडे ॥ मंये ॥ सायकुमे उवु डिनु निजने ॥ डेर विर
 युक्तिमउ वहु नं ॥ य इ ममापुः पलवं म्कि उ ५ ॥ ८ तान्दमिरे निरुतं पूरिषु ॥
 मेमं द मिनी वहु ॥ गड्डिउेषु ॥ नक तादेयु प्रभव नवेडुः ॥ सुमपुत्र इ प्रमकुते
 यु ॥ रिदु उरि कु किउदे पुमेवम ॥ ^{कमिक} कि क उव न गेठिकर ता थिंगुता थिक प्रमु
 पेउकी ॥ सुकरी पुनयमं कि उः मिद ॥ वमउः पल पिय मि उं मुतः ॥ दके उम म्कि
 कुवउग मुर

५५
 श्री
 अङ्गना

मन्त्रे वा न गमु ॥ श्री क पूः नृ पि प क रि २ २ मु ॥ ये न्दी मं हं ट कि ल मे प्र म मुः ॥ प्रे दुः भवेः
 मु रि डि मे डे प्र ल ॥ उ २ २ ए मे डे प्र ल ॥ म् गे व डी द्यु म ३ः मुः ग्ट उ ॥ गि ठ भ वुः
 मे म के र उ म क मु ॥ य ने द्युः क के ल मे पि ने युः ॥ रु उ क डि म म मु क र गे ठ ॥ उं ट म ड वि कु
 की वि र्य तं मु ड म् टा दु उ म हैः ॥ ने व उं म वि ल क न मे य ॥ म न्य ग टि उ व ट क क थी मे
 रुं ग रं ए न व र म न म कु ल म ॥ व नै क प न् म मि यो धी प की ग न्य न्य रु क ताम ॥ म् क ड
 लि मि रु कः वी ल क उ न ग न पं क ए र ठि ॥ के इ ह गे व नः ॥ क ट मं य मि

उ न म ड म ड
 उं ट वि कु

श्री
 ग म
 ५५

मिंडमन

उच्छ्वस्तमनः ॥ विप्रः स्रग्भूतिः ॥ प्रह्लादः पुनः नरदि तुंग ॥ उच्छ्वी ० गलि ककुमा
इ ॥ मान्कडेकु ० लान मरुतु ॥ कृष्णः विरठं विरठं मिठरी मरुंग मरुमं रतमाय
वी ॥ वे ॥ यमिप्रपु मंगतानी उमेयः ॥ प्रह्लादः विरठं विरठं मरुतिः मरुतु ॥ ठिं
वचमुनर के विभायः प्रमनुः ॥ कृष्णः विरठं विरठं मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥
वमः मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥
मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥ मरुतु ॥

श्री
गङ्गा ता
५६

दृष्टै न्नि विमलपते ॥ कुंडं व कल डिगड ॥ ध्रु नाना तुं वं रै सि डं ॥ विबु नाना वं कु डं ॥
सूयनं वरं च मे सुष ॥ इव कुम डि के पिता म डि य ये सुपुं वं उ पे ड ॥ ध्रु नाना म म ये ड ॥
म डि म ड ड विमि कु ये ॥ उ रू उ नं ग तो डू वे ॥ कल ॥ वु र ये म डि क मी ठे ॥ सावा म डे ड
न य डं ॥ कु ची ड लि ए विधु धर यः ॥ मग वि डं ग मु ग डः ॥ ध्रु न्नि मं ॥ म डी कु रं के वि
उ कं द मि बु ये ॥ मग वृ लं उः नं ध र मी ए मं य य ॥ इ पा व तो के म कु रं ध र व ड ॥
म र्ते वि व र म कु रं प्र डी के ॥ ध्रु नाना डू पः पं र य डू य व न ॥ साधुं दि डी ये वि गु ॥

श्री
गङ्गा
५६

[illegible]

इति संप्रति ह्युत्तिष्ठतुः संतु गयेने उरः ॥ कूवेयुं कुं कूगं उरु न च ॥ कूगं कुं उं कूविउं वं न मेयं ॥
 यमुं उं उं उरु न च ॥ कूवेयुं कुं कूगं उरु न च ॥ कूवेयुं कुं कूगं उरु न च ॥ कूवेयुं कुं कूगं उरु न च ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥
 कुं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥ यमुं उं न मेयं गताय ॥ य वदुं मिमि न उं मुभं ॥

श्री
 गङ्गा
 पट

कुं न मेयं
 गताय
 पट

मं०३॥ डि० मि० उ० भ० व० ॥ वि० य० ॥ उ० क० भु० य० उ० य० उ० उ० वि० ॥ क० भु० क० व० सु० क० य० ॥
 द० म० व० म० वि० वि० लो० क० मि० पुं० ॥ मा० य० ता० म० सु० वि० वि० ॥ म० डि० वि० य० उ० उ० न० म० उ० म० क० य० ॥
 मु० क० ॥ प्रि० य० न० प० र० म० उ० वि० य० व० उ० वि० य० उ० वि० य० ॥ मु० क० क० डि० र० म० ता० उ० वि० वि० ता० वि० ॥
 य० ॥ मु० क० प्रि० डि० य० वि० उ० ॥ उ० क० क० व० य० य० उ० ॥ म० ॥ प्रि० य० प्रि० डि० उ० य० प० उ० क० क० ॥
 प्रि० डि० ॥ प्रि० डि० सु० व० म० सु० डि० चे० य० उ० म० वे० उ० म० वि० य० उ० ॥ म० प० उ० म० उ० य० ॥ म० डि० ॥ प० क० ॥
 र० उ० म० वि० क० ॥ ता० वि० ॥ क० य० ॥ म० य० ॥ म० डि० र० क० य० उ० वि० क० य० ॥ व० प० क० य० ॥ क० म० ॥ ॥ प० क०

श्री विष्णु वरुण

۷۲

श्री

身 心 地

दृष्टुः॥ देवेहं दिव्यं ॥ अचलीयनं सद्यः सायति तन्मयवममा किंरुं ॐ
 तिमिषुन ॥ अमं मकेषु ॥ अं प्रीतिं मीं अं मधिकं दयितुं ॥ मेवेषु मरुथितुं
 ठठने धिउं ॥ सुधाधिकं विरुवरुमुवदंति केति ॥ मावेदयमुत्तुं ॥
 दगयनं नवं मः मे मुदपुं यतिव ॥ ननुवति यदित्दुवमं तुदं मी वग्मप
 वि ॥ यनं ममये इह मं वममुं दवं मः ॥ अपतिनति उदपुं मरु कं गी चवव
 नमं मुदपुं विरुपं कन्ति ॥ नु लंपनीयः कुलरं मठरुः ॥ अतंति उधुमउ

श्री
 वृमना
 ह

श्री
 म
 ह

[illegible]

भवम ध॥ कृष्ण कृष्ण विदुति कुंगदिय म॥ पू० ये ॥ गेमाः मडडीन वहेः पू० य० सुमंय
 ममयं विव डे॥ संभंडिय वडु मपेडिसा त्रि॥ नगिपरेडु उर ए० त्रिडा उमा॥ गंयं उ
 ग० उ॥ य० वडुं कुम गुरुचरु नडिने॥ म० सुंग ते उ० कर्क०॥ य० व० सुंग ग० न० गुरुचरु
 गे॥ न० य० उ० ग० मि० त्रिः य० व० डे० पु० य० उ० उ० ह० उ० र० ए० वि० रु० ड० उ० व० र०॥ उ० व० डु० च
 ए० न० म० ग० ल० वि० ठे० गे० पु० लि० कं० म० म० उ०॥ गे० रु०ः सु० दं० गि० ठे० र० ॥ पू० य० ॥ वं० म० क० न० दं०
 कि० ॥ य० व० वि० व० डे॥ ल० ह०ः पू० य० म० न० मे० व० मि० उ०ः व० डु० व० न० गे० य० र० पू० म० ॥ म० म०

श्रीगणेशाय नमः

श्री

रत्नमाला

द्वारा

हिमालय

श्रीगणेशाय नमः

भवतु पं वडवै पववु वदंति यस्तु वमुडि उत्रः॥ दे मंग उहे क विलेखनं॥ निम्ना लुने उंति वि
मेनु नीधी॥ पू रूप उ उरु देव शुभं धृः॥ क ले पू कु के वक द विव दः जं च च कु सु
मर र कु सु॥ ये म रं व म च क लं विरे यः॥ क दु के डुक मंगला न व प र्मु पु प क विठः
धर उ मु वरः॥ धा सि ड गि न म न क ग व प व पुं म म पे डि मु क मु उ मे व उ उः॥ उं डि म प
उ वि र ति उ दं हं डि प र र्नु म ल पं वि व ड प क पं पे नु मं॥ ग द॥ न व व मु प क र लं॥
उ य वृ य र्नु म क र र्नु ठ रं॥ व ल ति म म् रु व ग न न न क॥ सु य व र ग र्नु य मे ति

श्री

रत्न

द्वारा

दृष्टैः गडं गडं विनिष्ठं पयउ॥ चरैः सुमैः यमिं ५ म् ॥ मोः रतुयः ॥ परिगमः ॥ चं चमैः
 कुमे लैः उरुं यः कः कः दृष्टं ॥ विमुः सुयः मगुल्ले प्रुक्तु ॥ यमैः यमः मनुवेनु
 दि॥ गडं पुनः यः विपमः प्रमत्तः ॥ वरुदुः गः मच गति चरु ॥ चरैः उरुं उरुं च गति
 चैः उ॥ दृष्टैः उरुं उरुं मगः कः नैः वरुदुं प्रमत्तः ॥ कुदः सुमत्तः उरुं उरुं कः ॥ पउंति पः उरुं
 यः यः मं मं यः उरुं उरुं दिग्मत्तः उरुं ॥ सुयः सुयैः सुयैः लमा ॥ हे यैः यैः यैः
 पः यैः उरुं उरुं कः उरुं उरुं पः यैः उरुं ॥ यैः यैः यैः यैः यैः यैः यैः यैः यैः यैः

श्री
३ कुमाता
६३

डिपमुद्राडि॥ दृष्टविविचिनमो॥ यद्वृष्टकिडिगवठनं॥ श्री सुवद्रुयं ८॥ लक्ष्मी प्रडिबुवडिउ
 यनं रंतः कपुः क्रमो ॥ १॥ सेडा द्युमनिगिडिडतां॥ वरुमा नुं पदिपुं॥ कविनद्रुडिउकुं
 उगडिउ॥ प्रचयसुमनाय मिगडु ॥ १॥ डे लिमेय द्युवृमिकरुडे॥ दृष्टि ॥ १॥ दुवम
 यडिठिउकुदुड ॥ माहव यदिकविडिउद्रुडि॥ दृष्टि मेकठन डमिमम डमीनर
 पमिबुनं ग न गडि॥ कवयेद्रु कडडननु वकर ॥ काद्रमिबिभाव युंधि॥ मिमिडुम
 कुनदिडिः॥ १॥ १॥ द्रु प्रवृगड वं डे॥ कीवुयेडु मयं वठः॥ गुरु डुमड ॥ १॥ १॥ मिमिडु

श्री
३ म
६३

श्री
रत्नमाला
६३

३

विष्णुसङ्क्रिया ॥ भक्तियोगे लक्षणं यदुपलब्धं । लक्ष्मीं वदन्तु उक्तं नुविक्तं तं ॥ भिदुर्मेधं भक्तिर्देवः ॥ गेयवेदेनैव
विष्णुहयदेविठनं ॥ एकपितृनं परिभगवतु ॥ दयाम्भुः कर्तव्यं नये ॥ कर्तेति गेयपुत्रुत्तु ॥ मत्पुत्र
नैवेदिदपहनयः ॥ पुत्रपुत्रकन्दुनयति ॥ उक्तं वभनयं नये ॥ प्रथमं वेदमन्त्र उक्तं प्राग्भुः भक्तिविष्टु ॥
गेयकन्दुवगिगुत्तुपरिभुः ॥ यत्रैवैव परमं भुक्तं ॥ मत्पुत्रं मन्त्र एतामुपरः ॥ मयेति न
वी पुत्रयेन नग्नः ॥ उक्तिमपि विगन्तुं यं एति परदुर्गात् यं वपुश्चकवां मत्पुत्रं ॥
मत्पुत्रमेव मन्त्रं मन्त्रिभ ॥ ॥ यदुक्तिदुक्तं वपुश्चकवां मन्त्रं ॥ मन्त्रं यदुक्तं च विष्टु ॥
वपुश्चकवां नुदयति विष्टु ॥ मुक्तं वमन्त्रं विष्टु ॥ विष्टुमेव मन्त्रं मुक्तं मेव यदुक्तं

श्री
रत्नमाला
६३

पदमिमेयमे उयभा जमिउयेपि ॥ उपममममि मिपसुमं ॥ हेपु रिममोडिपुयेउरुवतं ॥
 मिः पनरु ॥ ३ पिउमि डह ॥ ३ तेमुपपुउय गेगपीव ॥ ५ मं पनेरु मउगे डडि ॥ म्डी ५३२३
 निवमु मिउके ॥ २० गेमिउरे व उर नेविलग ॥ १० म्गट डै ५३ मिरी किडेसु ॥ कम्प मिउते चीदप
 उेमुमोमे ॥ मिम म्मा डुव नन्दमं ३ ॥ १० वि ॥ लान्कृगुः ५३ गउ मुनीवः ॥ वपुः कुलमिगुम
 कम्प मुडीयः ॥ निवेमनेयन गटुम उवि ॥ म उदयं डिपुवडु मं ॥ ममं कदी वोपुम डाला ॥
 कुरुक रेलग उं पयन ॥ ५ रं कल उवनन उर ॥ मि डिमिउकु मग्दम मिडि ॥ १० सुवतु
 उिउगे विलगगे ॥ २० मं ड मि म उतामि उ ॥ १० सुगे गविम उ उय वगे ॥ १० डि डिः पल

श्री
 ३९
 १

मं० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री
 श्री गंगा
 ३९

मंदाकिनी लुप्य गुरो रं दं ॥ मिमं वृगो गं कुमिकं कपु ३ ॥ उग्र विप्र-वै वै ३ सवनि
मं दं रं लः ॥ २ कैः मं रं त्रि रं क म ॥ धी रं दः रं म मे उ वे ३ ॥ उषा रं क म व व ५ ॥
धी रं क रं न क ३ ॥ धं क रं ३ ॥ वि प्र उ रं क ३ ॥ म ड रं रं रं रं रं ॥ मे ३ मं रं किनी
व ३ ॥ मं रं गुरो रं रं वि प्र रं म मि मे वु वि वृ गो ॥ गं क रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
म वि उः रं म उ ॥ म म मं रं रं रं रं ॥ धं क रं
धी रं मं रं

क० ॥ वह उन्मोरे ॥ इ वन्दल वि रिड के करु प्रयक्ता ॥ ३० : मूडिमि थि रं उ उ कयं रि
 दधि ॥ नमः प्रि र म वि लो म नु क रं मि उ ॥ सुग्ने वै द्यु व पु य मे स्व नु ॥ इ प्र चि दै र
 मि न्नी ॥ उ गं द्यु उ रं नै र उ त्रि कु ल र द्यु क त्रि उ र न्दु रं ॥ यद्वा रि क रं वि लु डिय म
 म रं दं व उ य वि रं ॥ इ द्यु म्पे कु ल इ यं कु ल कु ल इ द्यु त्रि म य लि उ ॥ मयै यं प्र य
 न नं ॥ न ग म्म वि र यः कु ल उ य ॥ म्म उ मि द्यु प कु ल उ य उ ॥ यद्वा उः कु ल कु ल उ य मं रि ॥

श्री
ॐ नमः
ॐ नमः
ॐ नमः

मिहिमेत किउि वुडे नैठयैमु ॥ सायगंगुं उं ॥ पं पु मिनेः मा दृ मि उरु यैमु ॥ उमु ए पु भुल
यै रं उ गं लं ॥ उरुं वुं उं वरु मु उरु लि कं डि व रं रु नै द उ कं लो पु मि पुं ॥ सायगंगुं
रु उ न री व डि डि रं मा उरु मि पु उ वे उ उ रु ल उं उं ॥ यदि री व डि गं वुं उं वरु र य उ रं ग
उ वे उ उ रु ॥ सायगंगुं उ उ रं लं ॥ सायगंगुं उ उ रं लं ॥ परि उ उ रु मु वं लं ॥
मम पु कं पि उं य व ॥ न उ रु यं वि ली क ये उ ॥ उ उ रं यं क ये उ ॥ वि प द उ उ रु रु ॥

श्री
नमः
ॐ नमः

[illegible]

श्री
गंगा
३४

^३
 वैष्णवेण्डियुतु गमन ॥ वेवडी म ग मिरि मिनी सुयि कुं ३ उं म म डि ये के ३ ५ उ ॥ मी म म मि
 डि य म व ॥ म विष्णु ॥ ५ उ सु व व ५ उ ५ य उ ॥ मि ॥ मे ३ ॥ यु कु नि न वे म व ॥ लं वि
 ले क ने उ डि मु उ पु ॥ ॥ म य म डी ॥ व र व पु नं ॥ म म ग मे र कु ॥ ॥ य दे
 पु उ ॥ म म मं क र मु ॥ ॥ य दे म ॥ न व रु मे ॥ ॥ ५ च व म व ॥ प र उ ग यं दि मि रं
 उ ने ॥ डि य के ॥ म उ डि ॥ ५ च उ ग य डि उ प डि ॥ वे गै यि उ म प र उ ग यी य डि ॥
 ५

श्री
 वज्रमाला
 उ३

ॐ
 श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रेम नमः प्रभुः परमेश्वर ॥ श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री
 वज्रमाला
 उ३

मगतीववे॥ कथितुं मीधुमंक्रम ल उषा॥ इति पदादुदितं पदमधिकृतिः॥ यवद्विभं मेव
 यनयुतिभु उ॥ उरुगक तोनदिव कवत्॥ यद्विभुवेद्विधुपदादिकानं॥ उरुमेउ
 द्धुतिविः पूद्विधुं॥ गतिभभाभाडा॥ मविद्वमंनु लमे द्रियदममी॥ उरुचमंक्रम लं कुच
 उरुविः॥ भाषम डेदु व म मकपमुद॥ मविद्वैः कथितुं द्धुतिभभाकः॥ यद्वै मेरुडिभ
 म्मिभा लितं॥ मंक्रमेनुवतिउतिगम रैचिधः॥ उरुमंय लम धुयत्ररः म यम यधिवमे
 एकस्मिन्वर्षमध्ये तोदो मासो भानुलंघितो॥ पूर्वमासः पशुसस्यादयश्चाधिमासकः॥ १॥ वर्षार्धमध्ये रवररश्मि
 मालीमासद्वयं यद्यधिकं करोति मध्येतयोप्रा भवमेव उरुपमादुर्द्ध्वं तीयं मलिनं द्विजेन्द्र॥ २॥

श्री
 वसुधा ल
 ३३

श्री
 गुरु
 ३३

परः कूठ । विम्व वमववयव उवा एमु । पर उः पूवंग नभा की लाक उंति मे ममं हमु । मा ठ व
 वि विपन । दयपरि ठ वी प्रभा विनभा नी ॥ मुनेट व कुमा पि ॥ नताधिं गलाक
 लायकु मु ॥ मिबु ऊ ऊगे उ युमुति लुं दुतये वडुगः प्रभा दयव । मठि विं कु वी व कु ड
 मंडुकः देठनः रुपकडा ॥ उं यं डिध लुं धरि वडुग लं । वडुमपडे प्रपम न मि
 वेगा उ ॥ उं द हडा पुचनानि प्रपदे प्रिये ए नी य ग म न कुमे ॥ उयमि

उपविता

पुनेसतेभनयः पुचमनयः उं वं वग उं वं उं व पुचमनि प्रपदे उं
 CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गाता

दि वे कुं वे गे

श्री
ॐ नमो भगवते
३

पद्मयन्त्रमः। वक्रमयः। तिमः। प्रथमः। तावगः। तः। मन्त्रः। वः। मन्त्रवेवः। मन्त्रवेवः। त्रिपिहः।
एनडिउं। वक्रमयः। वक्रिष्टः॥ प्रथमः। तिमः। मन्त्रः। एनडिउं। वक्रमयः। तः॥ वक्रमयः।
३ पंचकेन॥ वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥ वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥
वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥ वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥
३ वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥ वक्रमयः। तिमः। मन्त्रः। वक्रमयः॥

श्री
ॐ नमो भगवते
३

ॐ उः ॥ वदिकेयिङ् यक्केच ॥ चङ्गेममः प्रमदते ॥ मनम नकुड मनम नमः मम सुपक्व वयि
देवयिङ्गे ॥ दिङ्गे निवङ्गे गपल मुक्त हृथे ॥ मुक्त मुक्ते कम्पल्लु डी प्रमङ्गे ॥ १ ॥ उं डि मी प डि वि
रन्ति उं चं ह्दि डि वरङ्ग मरता चं मं वङ्ग र प्रकर ल्लमा प्रयने ॥ माय डि वि प्रकर ल्लमा र नृते ॥
डि वि थ मु उङ्गे प वि ठां ह् वि ह्वै वै यम मा उ टी ठं डि वि मं थ व डि ल्लः वं नं गं रं मि व
डि म रं म् यै ॥ मरं नः कं लि म रं वि मं उं ह् थि ॥ डि वं डि न्न मं डि उं ॥ थि रं रं मं ह् थि म् रं

श्री
रतुनाल
५

इयेंदमी इडी ययें ॥ म्मु उचु विडुयें पचैः ॥ म्मयेपुग म्मे कु ॥ वद्विचिचिंरं गिरिगग म्मः
० म्म विम पिदिनरु उमः ॥ दुजं उकै विष्णु डरिम्प रमु। मचः ममी उडिपुग म्मदुपुः ॥
मायडिषी नं नभा त्रि ॥ वृषिः म्मंगल म्मदर वता पता ॥ ताद्वी वडी इवयमा पठ ३ श्री
मुमि इ ॥ उचु च ता म्मउ डी डिबिगग कद्रु म्मद वृषि म्म प्रडि पद रिउवै नर ॥ रुमपु रम
मैवट्टु म्म वीग ॥ म्मो म्म दूया पंरदमी डिबिः म्म उ ॥ ० ता निर म्म म्मदम त्रि उमं ॥ ५

नऽष्टि त्रिबु नमदा दृडा नि॥ माये उमं नम नि॥ नरु नरुदु नरु यऽठि कु। प्रहे डिमच
 सिषयः नमऽदु॥ कनिधुमये अकला मुमुले॥ नये उवंदु उममद डी नः॥ मय
 नंरु दिदुहं॥ नंरु मरिदु उव वऽमु उंउ॥ ये इ दिनुची उ उयेवं॥ विवऽपुय म
 कऽ यय॥ उदु ली कऽ दऽ नृ यिथो अ का नि॥ एय ममंगर म वलीय येगि क
 दऽ लि मिबुं डि डि मि डि डा नि॥ चिनुम विद्विबु वंठय उ॥ विथऽ गि मयु दिचय डि मिबु॥

श्री
रुद्रमाला
६
६

ॐ प्रहभनं गल विवडयड ॥ मथे धिकं मं डिक कक कं दं । मदैव नै थिड कक ननु
 न च द्दिरप कुकुमंगलादि ॥ ममय नु रूमा ॥ डिथिनु युग्म पत्त पत्त रू ॥ उवेडि
 डीयं रमनी रडिड ॥ रमसु डमं विथमा वरिं धु म् ड मनिडै डवमी विडय ॥ मम
 रू र गड वेम न डिथिरेथमा ड ॥ सुड सुडमः क्रिय प्रचिक लं ॥ एयं सुड ह मथि पंर
 मी न ड ॥ यरः परेयं पर उमुवेव ॥ मरू र म सैर सुड डिथिः र ड ॥ १ कं उर दिनकवे

व मली
 म ६
 श्री
 र म
 ६
 व म

श्री

ॐ नमो भगवते
स्वामीने

महं निरुद्धं यमेतदपि हि दीयते ॥ मधुमन्त्रि नवमीयुग्मं पदि नृः नमः कुरु दित्ति धित
मलाकै नृ नृयः ॥ यथुी युते तां यतागधुमीयु ॥ नै रं क्रियं नमः कुरु दित्ति धित
नं नयु कला नृयं नमः नृयः नृयं नमः कुरु दित्ति धित ॥ मधुमन्त्रि नृ नृयः ॥ नृयं नमः
कुरु दित्ति धित ॥ मधुमन्त्रि नृ नृयः ॥ नृयं नमः कुरु दित्ति धित ॥ मधुमन्त्रि नृ नृयः ॥ नृयं नमः
मधुमन्त्रि नृ नृयः ॥ नृयं नमः कुरु दित्ति धित ॥ मधुमन्त्रि नृ नृयः ॥ नृयं नमः

श्री
नमः

वंपममपरीक्षितेषु पिबेन्नमिधुमपिलेपयन्नुधु + ३

कैरं विरट्टमिमिभं पयेच ॥ लिङ्ग विषु लं न वने न राद्रि ॥ लुग्लु यानवयते दिष्टं न नं । ट ठ क व
न उ न उ के धुपि ॥ म्भक क्क पंभमे पंभमे दिबुलंग ॥ कै र कुट्ट रये मिष्टु उ र कं न ठे उ ॥
धद्रु डिकः पंभमपाः डिमे ई ॥ वद्रु डू के यमु उ र उ र मु ॥ कै री म कं उ र न न मे यि । न पू ॥
डी डि प्रकटः प्रवटः ॥ मय मे पता वं न न न्द्रु ॥ मी मे ये ये वै धु वे व म् व प्पे ॥ उ मु य
डि डू धु प्प य मि वे ध ॥ र के दि हे मे पता व र मे कै ॥ मं भु दे उ न म्भ क द व रैः ॥ मय वि व

श्री

रामा

२.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ भक्तमैत्रेय उवाच ॥ दिव्यं कुरुः ॥ यो धुमावतमप्युवाच ॥ त्रिभुवनैः निचरं विभुं विष्णुं गीतं
मं ॥ पालिपितुन विविचिठियते ॥ ॥ मया गुरुं नं ॥ प्ररूपते यो धुमेन विष्टे वै ॥ पुष्टे ए
धुमेनैवै कुरुकं ॥ मया गुरुं नं द्युतं गुरुं ॥ मयं प्रेक्षुं प्रेक्षुं नै जज्ञमोः ॥ मया वि
ष्टं गुरुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मया विष्टं गुरुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मया विष्टं गुरुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
इत्येवमवच्छिन्नं उवाच विष्टं मया गुरुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मया विष्टं गुरुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री
राम
३.

[illegible]

श्री
नम
१५

आदित्यबुधपुष्येषु नववासो विधारणं नेकुंति मुनयस्त्री रागांत अर्जुन निप्रदं

गेषि रपुन चण्डये ॥ रे व ती म व म दैव ते मुने ॥ न व व म्पु म्पि न भिय ते ॥ क म्पि यं न के मु
ते ॥ म यै पु व म्पः म्पु ॥ प्पु ति मु म्प कं प्पु ॥ पू व ल र कु व म्प म्प ॥ प्पु पु ते मु ति म्पु पु
मम्प ॥ पु न च म्पे मु ति ती ये वि न प्पु ॥ पू व ल र कुं व र डे म म्प न ॥ उ उ द दी के उ व
ल यु ति पु म्प ॥ म्प यं म व न जं ॥ म्प म्पः म्प कः पु न च म्पि ते मुं म्प पु प्प के म्प गः ॥ ग वि
पु म्प उ ली व व म नः ॥ क पि ताः पुं म व न टि म क पु म्प ॥ म्प क ल वे रः ॥ यै पु वे म्प व
का की व वं म्प म्प व ती ति मु के ह्य ल्प य ज्ञाः पुं स व ने बु धे च ॥ शौ रे रा म्प म्पुः प य म्प ल्प ते न
मो म्प ॥ किं जी वै र्प पु त्र ली मः ॥

श्री

शुभा ता
१७

श्री उमंगलाविठ नमेधुतु ॥ सुमिनी गुरु कुंभक देवतं ॥ नट ठिलि ललाचतुधुयं मंतं ॥ ५४३
य^{रु}ल^{रु}तु^{रु}य^{रु}ठं ॥ हून मिल^{रु}गमने धुमि विटं ॥ उलामर निवग^{रु}देवतं च^{रु}ल्लपं^{रु}व^{रु}ती^{रु}
मं^{रु}य^{रु} ॥ तु^{रु}उय^{रु}विठिगं^{रु}इमा^{रु}ठं ॥ छे वंठवठक^{रु}रा^{रु}इतु ॥ वैधु व^{रु}इय^{रु}यु^{रु}उः ५४४
इ^{रु}व^{रु}उं^{रु}ठ ॥ वर पं^{रु}वकं^{रु}विटं ॥ टं^{रु}उि^{रु}वा^{रु}ही^{रु}कर^{रु}इ^{रु}धु^{रु}वा^{रु}उं^{रु}म^{रु}भ^{रु}व^{रु}न^{रु}विठि^{रु}पु^{रु}प्र^{रु}म^{रु}न^{रु}उे ॥ ५४५
क^{रु}इ^{रु}उय^{रु}मं^{रु}उिकं^{रु}म^{रु}पे^{रु}दु^{रु}ग^{रु}पं^{रु}ठक^{रु}मि^{रु}टं^{रु}ए^{रु}गु^{रु}चु^{रु}ठाः ॥ मा^{रु}४^{रु}न^{रु}विठि^{रु}पु^{रु}उं^{रु}वं^{रु}ठ^{रु}ने^{रु}पु^{रु}ट^{रु}म^{रु}उ

श्री
मम
१७

यं ई यं उ उल्लाप्य उगम न बंभुः प्रसिद्धं त्रिं ॥ पुष्पांशुं मरुत्तं उरु मउत्रियक ॥ वृद्धं मूविष्णु
 रु य ॥ चुचभु निरुवेदिता निभनिवि विष्णु ह्यैतु य उ पुष्पांशु च ल पद्म वार ल ग र उ पु
 कां च म उ र ल म् क य ग म विठि वि उ न र य उ ॥ ५ वृत्ति ये क म् च ॥ रै उ ल म् म डि उ म उ
 न उ य ॥ की रु यं ति म न ये स्व द्वा यं ॥ वी ल उ र न ग न विषे र न ॥ न म मं ति व डि उं म्
 रे पु च ॥ वं पु पुष्पांशु म मि मि उ दै व ता हं ग नं ति म न ये म् उ ह व ॥ मि उ कं द र ति कु यं लं व

श्री
चक्राला
१६

[illegible]

ਸੀ
੫੫
੧੬੫

मरुगरीक्षु वभिर्इं इमिरुति उयं च विम्वि विरिः ॥ गैविने वमवैवुथा सुतर लुडिबुपुयुथा विरः ॥
 मायमिन्टा टी नं च इति ॥ मम्वे कुं लु इयं ठवृय कुइं मयैवै वैमथकः च विं नै इमम
 सुतेयिमडि वरा यः पुनः मेव उः वृथै लु मगम कु लो कथिरवै वरु इयं वरः ॥ म
 उमै मगम द्य मुमुक वटी ये निरु कु उ मियं ॥ मयैयै इतं ॥ गैवृ थं गसमिं उम
 ममडियं मे मं च वरु गं ॥ वैरं वर मेयै सुमम उ उ इ विरु लो मरं लो कं वर उ उ

श्री

वृद्धमाला

१५

विष्टिः मधुसूक्तगोत्रगलीककुम्भे रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टि
कुम्भे ॥ मङ्गे यथात्रि मङ्गे रगीप्रेतग ॥ विष्टिः मधुसूक्तगोत्रगलीककुम्भे रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टि
सर्व ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टिः मधुसूक्तगोत्रगलीककुम्भे रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टि
कक ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टिः मधुसूक्तगोत्रगलीककुम्भे रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टि
रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टिः मधुसूक्तगोत्रगलीककुम्भे रगीप्रेतग ॥ देहप्रीमदितैः वरैः सुकक ॥ प्र० ३ ॥ विष्टि

श्री

४५

१५

श्री

श्री माता

९४

वा लवेदि एडिउ रयिकम् ॥ कौ लवेधुभटमिउविठनं ॥ उँ डिलेमुभमड मयकम् ॥ कैरे चवी ए मयकम्
मृति ॥ वलि ए धिमेद वलि क्रिया मु ॥ नमि विभा य डिउ उँ चविधुं ॥ विधा रिधा उँ रिधु उँ
मिधुं ॥ म वृमु यं वर नं गलाक मुयै क ॥ व कैं रे मेक जे डिउ रि य उँ उँ उँ ॥ न जी कटिः थ
वृय प्रकग उँ मु उँ रे ॥ विधु चूठै र डि उँ दु विठु ग १ थ ॥ म पि क द प म् उँ व डि म र लं च य ग
ल के ॥ म् उँ रि च क्क म् य कटि उँ रे वृ वि विलयः कालि दू वी रे मे वि रय म य धु क्क म् र त ग डः
म गी रे उँ द कः थ य गि डि य लं प च म न्य ॥ रता मि पि म मि र क्कः म च की न म व यः ॥ डि म

श्री

म म

९४

दमकै एतु ॥ पतिउदुमक्यं ॥ ॐ उम्री पति विरसितं यं एतिय रज्जुमा ता यं ये गपूक रं रं रतु
 ॐ ॥ ४ ॥ मयकर म पूकर मं मं रतु ॥ उदुदं रता कर म ति ॥ ववपूयं वं ता वकै ताव के ॥ उदं
 उवेडुं उिताम मयेयं ॥ गग विरं ॥ व म्मि रं विवि विट्ट दुर दः कर म्मि म्मि ॥ मयपु विमि
 र कर म्मि ॥ रतु रमी या ममि नि पू डी नं ॥ उद र व ग म्मि नि वि डी ये ॥ र म्म रं उं ये म्म रतु
 म्मि नं गे ॥ किं म्म म्म म्म पति पद ता तु ॥ मयेयं देवता ॥ ॐ देव द्म मि डनं मा द मा कुः ॥ मी की न म्म
 उ उिय र नं ॥ वल्यु म्म पि म्म व यु उयेय ॥ ये र र म्म म्मि रं रतु र मा ॥ पं धि क म्मि र मु र म्मि र वये ॥

श्री
वैष्णवा
१३

गोपचक्रं नृमिदं वृत्तैः ॥ चतुर्दिशं पश्येत् किं च ३३ ॥ दृष्ट्वा तद्विषयं विप्रैर्निगदिता ॥ दृष्ट्वा
 उक्तं जलः ॥ दिनकरं दिशश्चैव ध्रुवं च ३३ ॥ उवाच विष्णुः ॥ कथं विप्रैर्निगदितं
 यः ॥ पठति पुनरुवाच ॥ मंगला नं विनये ॥ धृता न कथिता दृष्ट्वा ॥ निवृत्ता वै एव गं
 ति ॥ देवहवत्सुता ॥ द्वाविंशतिरुवाच ॥ दृष्ट्वा तद्विषयं विप्रैर्निगदितं ॥ उवाच विष्णुः ॥ कथं विप्रैर्निगदितं
 कः ॥ यः ॥ पठति पुनरुवाच ॥ मंगला नं विनये ॥ धृता न कथिता दृष्ट्वा ॥ निवृत्ता वै एव गं
 ति ॥ देवहवत्सुता ॥ द्वाविंशतिरुवाच ॥ दृष्ट्वा तद्विषयं विप्रैर्निगदितं ॥ उवाच विष्णुः ॥ कथं विप्रैर्निगदितं

उवाच विष्णुः ॥ कथं विप्रैर्निगदितं

श्री
वैष्णवा
१३

कालोऽस्य धानं विवर्द्धयेत् विवर्द्धयेत् ॥ देवदंष्ट्रं शर्मकं सुखं सुखीदं नमः ॥ १ ॥

उच्छिद्यते ॥ अद्विष्टः ॥ मित्रमिव गुडविषु केचु ॥ कलकूमे लपतयः कथितं ग
५ ॥ वदं वृत्तं उरु मरु मन्त्री विरिच ॥ मेयं पुनरुक्तिवचैः प्रतिवेत्तं मु ॥
उंति मी पति विरिचि उंति यं एति यं माला यं वरप्रकृतिं मम पुनः ॥ ३ ॥
माययै गप्रक ॥ ॥ कर्म कुरुंति यैः ॥ विरिचः श्रीति यं युयुनः ॥ मी कुरुः
मैव न ॥ वदिग विरिच कुरु ॥ ॥ एतिः सताग पुं दृष्टि ॥ सवता मने कुरुं हव

श्री
वदुमा ल
१२

श्री
मम
१२

ॐ सु अ इ मं श्री

मचेधुपिमंगतोय॥ ॐ मे मुद्रः गृदवृत्तं क्लिप्तम् ॥ भवेत्पुनरुपविवल्यंति ॥ मायकुलि
क॥ भवत्तु दिव्यवृत्तं वेत्तु यत्तु क्लिप्तं क्लिप्तं क्लिप्तं क्लिप्तं ॥ दिव्यं दिव्यं कैवल्यां मिनी
यु॥ उगतिः उः क्लिप्तं भवेत्तु ॥ मायवृत्तं गृदवृत्तः ॥ वृत्तं गृदवृत्तं क्लिप्तं क्लिप्तं ॥
कंता गृदवृत्तं उयः मंगलः ॥ दिव्यं गृदवृत्तं विमुक्तं मंगलं ॥ मंगलं मंगलं गृदवृत्तः
इत्येव ॥ यत्तु गृदवृत्तं ॥ यत्तु किं क्लिप्तं क्लिप्तं ॥ उयः कंता गृदवृत्तं मंगलं

श्री
चक्रमाता
११

मधुमधुसूतः॥ उं म सु धूं विष्णु ति उव॥ वेंकटः पंचम माता॥ मधुचैत्रम
मरगुरुः। मुक्त कंठ मेति॥ प्रदुः गजप्रवृत्तिमन्यः। कैं २ कं देयु जुनं॥ मधुवि
विन्दु रं उं॥ विन्दु गुरुवरगुरु मितु ह्ये धुति धुं जं चयी॥ कुरुमु वृत्ति मयिकरं
हं मुमा नृ पमै॥ श्री उरं मे वरति एव उ॥ पंचता कुमिपुत्रे॥ कय म न वयि
उं॥ का तु यं देवमा नृः॥ सव र प्र उ र॥ म श्री वि लो र प्र उ र द्वितीया च मरु
भयः

श्री
मम
११

अत्रः

मन्त्रकर्मसुबुवाडिमिष्टिः उं नुं म मन्त्रिवा मनेषु उ। प्रैकुमेवापलकममिष्टि॥ मन्त्रे डि डि=
ला न्क रमरंरुने के। मं लि धूर्ति मंरुकर गये मु॥ म ५ म उः कं र्म उय ल व ५। प
उं गौ पल ली डरु डे ॥ मयनरु कम्पयि र्म न य ड लं उ र ५ ॥ मी लं र वी म उ उ मंरुकि र
मु मिष्टि उं म मुं वुठि र्म उवे डु न य ॥ हुन य मं डि लि वृगै प्रिय संग म य
मं र्म म ल य न्म वं वर ठा र मं र्म उ ॥ मयनै रवि र्म ॥ उं र्म मं क प य डि उ व ॥

श्री
ब्रह्मा
९

श्री
९

इति ते त्रुंगं पुनरिदं वदेत्तु नयः ॥ न ह्येव न न संन मेयि ॥ न वै दतेन वृत्तिप उयैग
नयत्वे मवे नर विधि पयै ॥ वृंगं पुनर नय चयुतुः ॥ मयव वृत्तिप वृत्ति ॥ व
प्रवृत्तिं मनये कटंति ॥ मुदं दयं इ वाम न एव चं ॥ पुष्टं उव रीय पय उ उम सुम
चे देम तु न न वि कंतिः ॥ व नै र उ नै पय व उ नै कं दं य यै इष्ट मयेति मित्रि ॥
ववे उदेव पय प्रद न ॥ प्रय उ नै निद्रि उ मय न चं ॥ मी म मी म गुर मुत्र व म मः

श्री

सूक्तानां

६

कंददिकुलेद्रिकुदडा ॥ ॐ ॥ साववुववगुरुं ॥ नैपुण्यपण्ययनं कलां मु। नि नददिमेव नि
पि तोपनादि। ठडुद्रिया कंरुन यकुमंठि। वृथांमनां दामुवुठे विठियः ॥ ३ ॥ सावगुवव
रुं ॥ ठडुद्रिया धै धिकयल्लु विट्ट ॥ मंगलडेमं वरवेन्ना यडा रया मुठै यल्लु विडुय
ल्लुटि ॥ कंदविट्ट वडुमं डिल्लिद्रि ॥ ४ ॥ सावमुद्रवगुरुं ॥ श्री गी ३ मया मल्लि रडुगनु
वन्ने डुवा तांकरल्लुटिकम् ॥ पुपण्य गै केमद्रियिया मु। निवुंउ मुद्रुट्टिनेममनुः ॥ ५ ॥

श्री

गम
६

श्री

श्री माला

८

उदमनीरुमपुमीमाये॥ वदताधुमीननुने॥ यथायं० क'विकेचउदु उ॥ द'ल्लुल्लमिउयंररम
 ऐडे ए'पुनर्यो लमा'मीर॥ मद्रुड गदय'मे॥ रडुडुमेकु वुठैः पुष्टः॥ **सवग ए'कय॥**
 रुधुपन्नु इयेर मं॥ मय्यामिन्नु कवे रविः॥ यद'उद'गरुक्क'य॥ म'डु पुष्टि रव'य
 डे॥ यडे कन्द म'डि डि विदूय' वम'नं व'गमुडु र वमदिनं उडु कुमादेः॥ यः न्द म'डुवडि
 डि विदूय म'रु ड्रु डि विदूय का पुन रिदं दूयं रने वु॥ **मं डि मी पडि विर सि डायं ए' डि वरु**
 मय'य म'सुयये डि मुद मुधिं यद्रुडुयवडिनीर॥ य'डु ड'डु डुयिलोय पुलं वरु डि डं क'न विरः पुन'ः॥ ॥ ॥

श्री

ग'म
८

उद्गुमिनीव नृपि नृपुदये ॥ चंद्रमृतेन मित्रं पंचदं ॥ नवयुगं विनोद ॥ भाष्ये पंच
 दमी नृपु ॥ नृपुतेन उच्यते मी ॥ इति या नृपे मुद्रा ॥ नवपुले युगपद्यः ॥ उच्यते
 निबुधं पर एवमाद्ये ॥ इति इति या नवमी नृपे ॥ एतं मुद्रां विषये युगपद्यः ॥ इति
 च नृपमा भविष्यति ॥ नवमं नृपुद्रां ॥ मुद्रायां मुद्रा नवमी ॥ इति नवपुले नृपे
 इति या नृप ॥ उच्यते पद्ये इति या ॥ इति नृपमा नृपे नृपे ॥ एतं नृपमा नृपे नृपे

श्री
चक्राला
४

॥ ५५ ॥ वेमरिस्मपूतिपू॥ विवडुर्लेला इउवंठपुचंमो मयने कद्रमुठं विठेयं॥ यद्रुडि
उं ३ ३ लरुडि ल यि॥ मायडडु लरु लभा॥ मगा दिर सिद्धय वु नु वुंग उ॥ यद्रु
उवः मद्रुः मिमि रै वमं उः॥ गरी मद्रु वद्रु सु मर सु उद्रु रै मं उर म कवि उद्रु यद्रुः॥
रुम वरिं म म ममंति म चं॥ मी रं उय उ मकर म मिठे ग उ॥ दिमद्रि नं म वन मं ए
मा द॥ म कद्रु मिद्रु रै ग ल इमा सु॥ म उं उ र उ॥ विवडु रै म उः मी रै। यद्रु रै म वतः

श्री
म म
४

श्री

२३ नमः
६६

उमररुक्कल्लमिव'मिना॥ सुददिव'नेवुमवेडुडिपु'सुमरु'कण्ड'यिनाडिगु
कु'मः॥ पुडि'मर'इवउ'नं'प्रडिपु'॥ मचं'वेउडु'इ'नं'वीद'यु'कुः॥ सुमि'रु
हेः'पि'रु'क'पु'र'नुं॥ के'रु'डि'के'॥ उव'क'वि'भ'म'रु'डि'पु'॥ इ'क'उ'म
म'वि'प'डि'प'नु'र'ग'यु॥ म'वि'प'म'उ'र'य'उ'प्र'डि'म'भ'र'वे॥ क'पुः'म'उ'उ'
म'प'म'य'र'गि'उ'र'॥ मे'म' ल'ग'र'र'मि'उ'म'रु'पु'च'न'उ'र'म

श्री

२३ नमः

६६

[illegible]

श्री
गङ्गा माता
१

ॐ नमो श्री गङ्गा माताय नमः ॥ श्री गङ्गा देवी नमः ॥ प्रणम्य भक्तानां चैव गङ्गा नमः ॥ ममैव
भक्तानां भक्तानां भक्तानां ॥ देव ह्येक एव गङ्गा नमः ॥ विष्णु उवाच ॥ त्रिपुरारुमा ता ॥ ० ॥
मंथैः १५५ विचिंत्य कैः कृपया चैव देव भक्तानां वसिष्ठैः मंथिहं मतिवैष्णवैक
विकैः पादुकेः भिगडैः पुत्रैः कथं विवेकै दत्तभक्तैः हनंत भिडा वृत्तैः
गच्छा कै भुवन भविष्य भयंतु मे गच्छा भुवः ॥ गङ्गा मम प्रणम्य देव विष्णु मतिवै
गिठिः ॥ भक्तानां विष्णु मतेषां गङ्गा माता भक्तानां ॥ प्रणम्य विष्णु मतिवै ॥ हनवंप्रति

मं
गं
१

श्री
रत्नाला
६७

वीदेव डू टभा वरयति ॥ यपुं डिडु भु वमे डे डिउउ मडू वरुं ककुन डू टयं डि ॥ २० ॥
उं डि मी श्री पति विरगिड यं ए डि यर कुमा ला यं दे व प्र डि पु प्र का लं विंम उमं ॥ २१ ॥
मभा पुं र कुमा ले यं मुं उ व कुम चे यं ॥ इ डे डे म मे रू पू य के उ व नं कुठ व म रे ति
धि उ म भा पुं यं ॥ य दि मं पुं कं डे पु अ नु डि मं ति धि उं म य य दि मुं ठ म मुं
व म मे रे ये न रे य डे ॥ म नुं मं व ड ३४ श्री विरग डि टा हं व ड ॥ २० ५
ति धि उं प लं उं ग र ति वि प्र न ॥ ३२ इ न व पु म न उ मी न ल म न ड ल क इ मुं म न

५
५
६७